## • भाषा और बोली

भाषा शब्द का प्रयोग कभी व्यापक अर्थ में होता है और कभी संकुचित अर्थ में। भाषा का सामान्य अर्थ के अतिरिक्त विभिन्न रूपों में भी प्रयोग होता है जैसे- सामान्य भाषा, बोली, विभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, साहित्यिक भाषा, कृत्रिम भाषा आदि। इन रूपों में भाषा और बोली भी दो रूपों में प्रमुख है। डा. भोलानाथ तिवारी ने भाषाविज्ञान की दृष्टि से इनमें कोई विशेष अन्तर न मानते हुये लिखा है — "भाषा और बोली में मुख्य भाषा वैज्ञानिक स्तर पर भेद बताना कठिन है। इनमें तात्त्विक अन्तर न होकर व्यवहारिक अन्तर है। दोनों में अधोलिखित अन्तर देखा जाता है —

(1) भाषा का क्षेत्र अपेक्षाकृत बड़ा होता है जबकि बोली का क्षेत्र छोटा है।

(2) भाषा में प्रचुर साहित्य उपलब्ध होता है, जबकि बोली में या तो उपलब्ध ही नहीं होता या अत्यल्प मात्रा में उपलब्ध होता है।

(3) भाषा और बोली का सम्बन्ध माँ बेटे जैसा है क्योंकि बोली किसी भाषा से ही उत्पन्न होती है।

(4) भाषा प्रायः साहित्य शिक्षा तथा शासन के कार्यों में भी व्यवहृत होती है, किन्तु बोली बोलचाल में ही।

(5) भाषा का मानक रूप होता है, किन्तु बोली का नहीं।

(6) भाषा बोली की तुलना में अधिक प्रतिष्ठित होती है, अतः औपचारिक परिस्थितियों में प्रायः इसी का प्रयोग होता है।

(7) बोली बोलने वाले भी अपने क्षेत्र के लोगों से तो बोली का प्रयोग करते हैं, किन्तु अपने क्षेत्र के बाहर के लोगों से भाषा का प्रयोग करते हैं।

(8) एक ही भाषा से सम्बद्ध अनेक बोलियाँ हो सकती हैं; लेकिन उनकी आधार-भाषा एक ही होती है।

(9) भाषा 'विभाषा' का बड़ा रूप है जबकि बोली विभाषा का छोटा रूप है।

(10) भाषागत वाक्यरचना परिष्कृत होती है, जबकि बोलीगत वाक्यरचना अपरिष्कृत तथा अशुद्ध होती है।

(11) व्यक्तिभेद से बोली में अन्तर देखा जाता है, लेकिन भाषा में नहीं।

(12) भाषागत वाक्य कठिन, लम्बे, तथा समासयुक्त होते हैं, जबकि बोली-गत वाक्य सरल, छोटे तथा प्रायः समासरहित होते हैं।

(14) भौगोलिक भेद से बोली में अन्तर देखा जाता है जैसे - भोजपुरी के अनेक रूप देखे जाते हैं लेकिन भौगोलिक भेद से भाषा में अन्तर नहीं आता है क्योंकि इसका व्याकरण सुनिश्चित होता है।

(15) भाषा शिक्षा एवं उच्चशिक्षा की माध्यम होती है, जबकि 'बोली' लोकगीत एवं बोल-चाल तक ही सीमित रहती है।

(16.) बोली को उपभाषा भी कहते हैं। गृह, ग्राम व समाज में बोली जाने वाली स्थानिय भाषा बोली कहलाती है। भाषा के स्थानिय और प्रान्तीय भेदों के अतिरिक्त ऐसे भेद भी होते हैं जो एक ही स्थान पर रहने पर भी मनुष्यों के भिन्न-भिन्न समूहों या वर्गों में पाये जाते हैं।